दीवाना

अंक : १२ वर्ष : १७ १५ जून १९८१

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

मुख्य पृष्ठ पर

जन कल्याण करे न कोई
सब सोचें अपनी अपनी
चिल्ली ने पर सोचा सबका
एक न सोची अपनी।
इम्तहान तो चीज ही ऐसी
हालत होती खस्ता
फेल हुये तो आंसू पोंछो
लो, रूमाल बहुत ही सस्ता॥

आगामी अंक में

***

आविष्कारकों के मकबरे

***

कल्पना के बादलों की बरसात

***

मुफ्त पोस्टर कुत्ता-बिल्ली

आपके पत्र

दीवाना का अंक ४ बहुत मनोरंजक लगा। मुख्य पृष्ठ पर मछली पकाता चिल्ली बहुत सुन्दर लगा। जीनत अमान का पोस्टर पसन्द आया। आशा है कपिलदेव का पोस्टर भी हमेशा की तरह सुन्दर होगा।

शिशिर विक्राँत द्वारा लिखित हास्य कथा कैप्टन लाला बहुत रोचक लगी। इसके अतिरिक्त दीवानगी, हाय हाय यूनियन, टू-इन-वन तथा सवाल यह है। बेहद रोचक थे, सवाल वाकई लाजवाब थे। इस सब के लिये आपका धन्यवाद। आपकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है।

अशोक सोतिया—जीन्द।

वाह रे 'दीवाना' तेरा खेल,
तू ऐसे लेट हुआ, जैसे भारतीय रेल!

वास्तव में दीवाना के नये अंक की जितनी बेसब्री से प्रतीक्षा रहती है, उतनी ही देर से दीवाना प्राप्त होता है। यह दीवाना के दीवानों के साथ सरासर अन्याय है। यदि भविष्य में दीवाना हमें लेट मिलेगा तो चिल्ली के ऊपर कानूनी कार्यवाही की जायेगी।

हाँ! इस अंक में स्थायी स्तम्भों के साथ साथ नामी चोर, टू-इन-वन से आगे और हाय हाय यूनियन स्तंभ रोचक लगे।

उमेश ज्ञान चंदानी—बिलासपुर।

दीवाना का नया व ताजा अंक अप्रैल फूल प्राप्त हुआ, मुखपृष्ठ देख कर जो हँसी आई तो घर पहुँच कर ही बन्द हुई। सभी स्तम्भ बहुत पसन्द आये। दीवाना फ्रैंडस क्लब में अपना फोटो देख कर बहुत खुशी हुई। मेरी ओर से दीवाना के लिये हार्दिक शुभ कामनाऐं। **अमरजीत—खुरजा।**

काका के कारतूस



सुशील डेविड, गोविन्दगढ़ (पंजाब)

प्र० : पहिले वे आते थे तो सलाम बजाते थे अब उनके कुत्ते हम पर भौंकते हैं?

उ० : सब वायदों को नेता, भट्टी में झोंकते हैं।
अब वोटरों पै उनके, कुत्ताजी भोंकते हैं।

एस० बी० कृष्ण, बालूभाई—बरेली।

प्र० : नौकरानी के आगे मालिक उल्लू कब बन जाता है?

उ० : दासी आई सुन्दरी, कल्लू मन ललचाय।
नयनबाण की चोट से, झट उल्लू बन जाय।

मुकेश गुप्ता 'अरुण'—खुर्जा

प्र० : मेरी एक साली जीवन भर मेरे साथ रहना चाहती है, रखलूँ क्या?

उ० : साली की ताली रखो घरवाली के पास।
नियत न बिगड़े देख कर, उसके भृकुटि विलास।।

करुणशंकर पाँडे, इटौरी (प्रतापगढ़)

प्र० : हीरो बनने के लिये कोई उपाय बताओ काका?

उ० : मम्मी का जेबर चुरा, पहुँचे, बम्बई आप।
जीरो बनकर लौटते बेटा हीरो छाप।।

धर्मेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, भोपाल।

प्र० : गाय को माता क्यों कहते हैं?

उ० : गइया को मइया बना, दूध लीजिये दोह।
फिर छोड़ो बाजार में, पुण्य मुफ्त में होय।।

कैलाशकुमार अग्रवाल, बलिपापुर

प्र० : काकाजी, आप इतने हाजिर जबाब कैसे बन गये?

उ० : काकी जब हाजिर रहे, काका लिखें जवाब।
नैन देखकर पैन को, आजाता है ताव।।

अब्दुल लतीफ बेताब, अमृतसर।

प्र० : पाक विमान के अपहरण से जीत किसकी हुई?

उ० : खत्म तमाशा होगया, ड़ालो इस पर धूल।
मियां 'जिया' खुद कर रहे, अपनी हार कबूल।।

विनय बिहारी श्रीवास्तव—गढ़वाल।

प्र० : कौआ दिन भर आकाश में उड़ता रहता है, रात को कहाँ रहता है?

उ० : निष्क्रिय वे रहते नहीं, दिनभर भरें उड़ान।
थक जायें जब, पेड़ पर शयन करें श्रीमान।।

कैसेट

कंवल प्रकाश, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० ईश्वर कृपा करे तो क्या होता है?

उ० दिखलाते हैं जब प्रभो, अनुकंपा या नेह।
मिल जाता है मंत्रि-पद, कंचन बरसे मेह।।

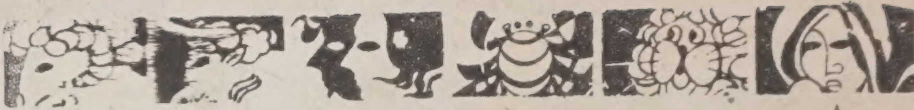
घनश्याम नरायण शर्मा, रायगढ़

प्र० ग़म के आँसू और इंतज़ार के आँसुओं में क्या फर्क है?

उ० ग़म के आँसू गाल पर, लुढ़क-लुढ़क बह जायँ।
इंतज़ार के अश्क सब आँखों में रह जायँ।।

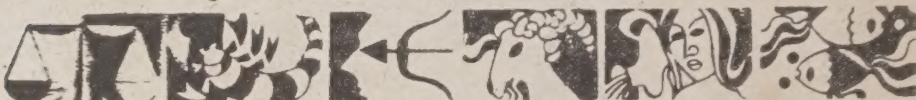
काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


होंगे बच्चे स्वस्थ
फले फूलेगा बचपन
इन्हें पिलाओ....
मुग़ली घुट्टी 555
अ हा...!
मीथी-मीथी
MUGLI
JANAM
GHUTTI
555 ®
SRIRAM AYURVED BHAWAN
NAVIN SHAHDARA
DELHI 110032
पुष्ट व सदा निरोगी
रखने के लिए
पाँच वर्ष की आयु तक
दैनिक प्रयोग कराइए
बच्चों को स्वस्थ बनाइए
अनेकों
माता-पिता
द्वारा
प्रशंसित.....
श्रीराम आयुर्वेद भवन दिल्ली-110032



आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



मेष : यह सप्ताह आपके लिए संघर्षमय भी है और दिलचस्प भी, विगत समय में किए कामों के शुभ मिश्रितफल प्राप्त होंगे, लाभ बढ़ेगा, शत्रु एवं रुकावटों पर विजय, अफसरों मे मेलजोल।

वृष : सप्ताह पहले से अच्छा है, मनोरंजन भरे वातावरण में दिन व्यतीत होंगे, शुभ कामों की ओर झुकाव रहेगा, कारोबार की स्थिति भी संभलेगी, यात्रा आसपास की ही होगी।

मिथुन : घरेलू परेशानी बढ़ेगी, काम भी पूरे न हो पाएंगे, चोट लगने का भय है, अन्य दिनों में मिलेजुले फल प्राप्त होते रहेंगे, रुका पैसा मिलने की आशा है, कारोबार की दशा में भी एक नया मोड़ आ सकता है।

कर्क : मन परेशान, शारीरिक कष्ट, हालात बिगड़ सकते हैं, सावधानी से रहें, अन्य दिनों में कारोबार से यथार्थ लाभ, हालात भी कुछ ठीक होते जाएंगे, भाग्य साथ देगा परन्तु सफलता कठिन परिश्रम करने पर ही नसीब

सिंह : संघर्षमय होने पर भी यह सप्ताह आपके लिए लाभप्रद कहा जा सकता है, परिश्रम सफल तो रहेगा परन्तु लाभ देर से मिलेगा, ऋण लेने या देने में चिन्ता, व्यय बढ़ेगा, धार्मिक कामों में रुचि।

कन्या : सावधानी एवं सूझबूझ से काम करने पर इन दिनों आप उचित फल प्राप्त कर सकते हैं, जल्दबाज़ी या गुस्से से काम लेना ठीक नहीं, बड़ों का परामर्श लेकर काम करें तो और भी अच्छा होगा।

तुला : घर में किसी को चोट लगने या शारीरिक कष्ट आने का भय है, झगड़े आदि से परेशानी, सावधानी से रहें, अन्य दिनों में यात्रा भी सफल रहेगी और हालात भी साज़गार चलने लगेंगे।

वृश्चिक : यह सप्ताह आपके लिए अच्छा तो है परन्तु सफलता एवं लाभ उतना नहीं मिलेगा जितना की आप परिश्रम करेंगे, आय में वृद्धि पर मिलेगी देर से, दौड़धूप भी काफी करनी पड़ेगी, यात्रा लाभप्रद।

धनु : इन दिनों संघर्ष काफी आएंगे, फिर भी यह सप्ताह आपके लिए अच्छा कहा जा सकता है, कारोबार में सुधार होगा, शुभ अशुभ मिश्रितफल प्राप्त होंगे, आर्थिक क्षेत्र में भी सुधार होने लगेगा।

मकर : इस सप्ताह के दौरान हालात कुछ बिगड़ सकते हैं, और परेशानियां भी बनी रहेंगी, संघर्षपूर्ण होने पर भी यह सप्ताह लाभप्रद रहेगा, कारोबार की स्थिति संभलेगी परन्तु लाभ कुछ देर से मिलेगा।

कुम्भ : समय ठीक नहीं, जल्दबाज़ी या गुस्से से काम न लें, यात्रा छोड़ दें, चोट लगने का भय है, अन्य दिनों में हालात अनुकूल चलेंगे, कारोबार भी अच्छा चलेगा, लाभ में वृद्धि होगी।

मीन : इन दिनों काफी संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु कारोबार एवं आर्थिक क्षेत्र में सुधार होता महसूस होगा, शत्रु एवं रुकावटों पर विजय पाएंगे, नातेदारों से मेलमिलाप, विशेष व्यय करना पड़ेगा, यात्रा में सुख।

मुक्ति के लिए



—नरेन्द्र भारद्वाज

जिन दिनों की यह बात है, उन दिनों इराक में गुलाम-प्रथा प्रचलित थी। इस प्रचलित प्रथा के अनुसार कोई व्यक्ति यदि एक बार अपनी आर्थिक स्थिति से तंग होकर किसी धनी व्यक्ति का गुलाम बन जाता तो फिर वह तब तक उन गुलामी की ज़ंजीरों से मुक्त नहीं होता था जब तक कि वह मर न जाए। अगर किन्हीं कारणोंवश पहला मालिक उस गुलाम को नहीं रख पाता था तो वह उसे गुलामों की मण्डी में ले जाकर किसी अन्य धनी व्यक्ति को बेच दिया करता था।

अली भी एक ऐसा ही गुलाम था। वह बहुत मेहनती और हृष्टपुष्ट नौजवान था। वह भी कई बार बिक चुका था।

ऐसे ही, एक बार जब अली गुलामों की मण्डी में बिक रहा था तब नगर का सबसे धनी व्यक्ति शेख इब्न-बिन-सऊद उधर से गुजरा। उसकी नज़र अली पर पड़ी। अली के सुदृढ़ शरीर से वह बड़ा प्रभावित हुआ। उसे ऐसे ही गुलाम की तलाश थी, अतः वह उसके मालिक के पास पहुंचा और बोला, ''तुम इस गुलाम की क्या कीमत लोगे?''

''दो सौ दीनार!'' अली के मालिक ने कहा तो सऊद बोला, ''मैं तुम्हें तीन सौ दीनार दूंगा, इसे मुझे दे दो।'' उसने इतना कहकर दीनारों की थैली अली के मालिक के सामने डाल दी। अली के मालिक की आंखें फट गयीं, क्योंकि उसे व्यापार में बहुत घाटा उठाना पड़ा था। इसलिए वह अपने गुलामों को बेच रहा था। उसने झपटकर थैली उठा ली और अली को एक लात जमाता हुआ बोला, ''चल बे, नये मालिक के साथ जा।''

रास्ते में अली और उसके नये मालिक में बातचीत होने लगी। सऊद ने उससे पूछा, ''गुलामी का क्या यह तेरा पहला ही मौका था?''

''नहीं, तीसरी बार मुझे बेचा गया है।''

''तीसरी बार! क्या तू कामचोर है जो हर बार मालिक तुझे बेच देता है?'' सऊद के पूछने पर अली बोला, 'ऐसी बात नहीं, मेरे काम से अभी तक किसी को कोई शिकायत नहीं हुई।''

''फिर तेरे मालिक तुझे बार-बार क्यों

बेच देते हैं?'' सऊद ने कुछ झल्लाकर पूछा।

कुछ देर तक तो अली चुप रहा, फिर सोचकर उसने एक युक्ति खोज निकाली। बोला, ''जी, बात यह है कि मुझे साल में एक बार झूठ बोलने की आदत है। बस, मालिक इस पर नाराज़ हो जाते हैं और मुझे बेच देते हैं।''

यह सुन सऊद ने बड़े ज़ोर का कहकहा लगाया और बोला, 'बेवकूफ थे तेरे वे मालिक! अरे, मेरे पास तो ऐसे-ऐसे गुलाम हैं जो रोज़ ही किसी-न-किसी बात पर झूठ बोलने लगते हैं, लेकिन मैंने तो किसी को नहीं बेचा!''

''पर मेरा सालभर में बोला हुआ एक झूठ आप बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे, मालिक!'' अली ने कहा तो सऊद बोला, ''क्यों नहीं कर पाऊंगा!'' फिर कुछ रुककर वह बोला, ''ठीक है, अगर मैं तेरा वह झूठ बर्दाश्त नहीं कर पाया, तो मैं तुझे आज़ाद कर दूंगा!''

जब इस शर्त को सालभर होने को आ गया तो एक दिन सऊद ने अली को बुलाया और कहा, ''मेरे साथ गोदाम तक चल, वहां बोरियां गिननी हैं।'' अली साथ चल दिया।

गोदाम में पहुंचने के बाद सऊद को अचानक याद आया कि वह घर की तिजोरी शायद खुली छोड़ आया है। उस समय अली ही उसका एकमात्र स्वामिभक्त गुलाम था। उसने अली को ही बुलाकर कहा, ''जा, घर जाकर देख कहीं तिजोरी तो खुली नहीं रह गयी?''

मालिक के हुकुम के अनुसार अली तुरंत ही घर के लिए रवाना हो गया। जब वह घर के पास पहुंचा तो उसने कुछ सोचकर बीच रास्ते में अपने कपड़े फाड़ डाले और लगा सीना पीट-पीटकर रोने, ''हाय-हाय! मैं लुट गया . . . मालिक मुझे छोड़कर चल बसे।'' सऊद उस नगर का बहुत प्रतिष्ठित नागरिक था, अतः उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर लोग जुड़ आये। एक अच्छी-खासी भीड़ एकत्र हो गयी। अली अब रोता-पीटता सऊद के घर की ओर चल पड़ा। भीड़ भी उसके पीछे-पीछे हो ली।

सऊद की बेगम ने जब अली को इस प्रकार से रोते-पीटते देखा तो घबराकर बोली, ''आखिर हुआ क्या है? कुछ बतायेगा भी या यूं ही रोता-पीटता रहेगा?''

''मालकिन, मालिक चौकी पर बैठे बोरियों का हिसाब लगा रहे थे कि अचानक कई बोरियां एक साथ आ गिरीं उन पर, और वे अल्ला मियां को प्यारे हो गये। हाय-हाय, मैं तो लुट गया . . .!'' अब तो सऊद की बेगम भी अपने कपड़े फाड़-फाड़कर चीखने-चिल्लाने लगी। उसने घर का सामान उठा-उठाकर फेंकना शुरू कर दिया। उस समय किसी के मरने पर उसके घर वाले इसी तरह शोक मनाते थे। अली भी रोने के साथ-साथ घर का कीमती सामान उठा-उठाकर तोड़ने लगा। कुछ ही देर बाद बेगम ने उससे कहा, ''चल, अब उन्हें दफनाने की तैयारी करवा। तू उनका शव लेकर क़ब्रिस्तान पहुंच, मैं भी वहां पहुंच रही हूं।''

''गोदाम में आदमी पहुंच गये हैं। उनके जनाज़े की तैयारियां की जा रही हैं। मैं भी गोदाम जा रहा हूं।'' इतना कहकर अली वहां से रोता-पीटता गोदाम की ओर चल दिया। जब वह गोदाम पहुंचा तो सऊद भौंचक्का हो उसे देखने लगा। बोला, ''क्यों, क्या हुआ? रोता क्यों है?''

शेष पृष्ठ ५२ पर


मोटू का
बर्थ डे
कुछ दिन पहले मोटू का बर्थ डे था, जिसे बड़ी सादगी से मनाने का निश्चय किया गया और इस बात के लिये हर प्रकार की सुविधा बरती गई कि इस अवसर पर कोई हंगामा न हो। पर हंगामे कभी किसी के रोके से रुके हैं। ख़ास तौर पर उस समय जबकि मोटू-पतलू की किस्मत पर अलीगढ़ का ताला पड़ा हो और घसीटा राम हर मुसीबत की चाबी घुमाने के लिये तैयार बैठा हो।
सोचा था मोटू के बर्थ डे पर उपहार में जूतों का हार दूंगा। पर यह आईडिया ग़ज़ब का है कि उसे लैटर बम भेजा जाये।
जैसे ही वह लैटर खोलेगा, इसके अन्दर भरे बम का धमाका होगा, धड़ाम। बारूद से सब कुछ उड़ जायेगा। मतलब है न रहेगा बांस और न बजेगी बंसी। मोटू-पतलू ने हर काम में टांग अड़ा कर बीस साल से मेरा सत्यानास किया हुआ है।
हो गया पत्र बम तैयार। उस तरफ़ मोटू का पता लिख दिया। और इधर भेजने वाले का, यानी अपना पता लिखा, श्री घसीटा राम मकान नं० ४२० गली पापड़ वाली तरावड़ी का घाट दिल्ली नं० ६।
डाक निकलने का समय हो रहा है। पत्र मेरे पीछे-पीछे ही मोटू के पास पहुंच जायेगा। इसे लैटर बक्स में डाल कर अब ज़रा चल कर देखूं जन्म दिन की खुशी में क्या पकवान बनवाये हैं मोटू ने। आज इतना खाऊंगा कि मोटू-पतलू का दिवाला पिट जाए और मुझे एक सप्ताह तक भूख न लगे।
रास्ते में प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रोफ़ैसर डबल ज़ीरो की प्रयोगशाला पड़ती थी. प्रोफ़ैसर ने क्या-क्या नये आविष्कार किये हैं? यह देखने के लिये घसीटा राम ने सोचा कि क्यों न कुछ देर प्रोफ़ैसर डबल ज़ीरो से बातचीत की जाये। हो सकता है यहां से कोई ऐसी चीज़ हाथ लग जाये, जो देखते-ही-देखते काया कल्प करके मुझे रातों-रात मालदार बना दे।
घसीटा राम प्रयोगशाला में पहुंचा तो बड़ी-बड़ी जटिल और भयंकर मशीनों और कम्प्यूटरों द्वारा काम करने वाले मशीनी आदमी देख कर दंग रह गया।


प्रोफैसर डबल ज़ीरो उस समय प्रयोगशाला में नहीं था। घसीटा राम ने इस अवसर का लाभ उठाने की बात सोची।
गैस के सलैंडर की तो वैसे ही बहुत कमी रहती है मार्किट में। मेरे रसोईघर में एक सलैंडर दस दिन से फालतू नहीं चलता। क्यों न यह डिब्बा उठाऊं और यहां से चम्पत हो जाऊं
यहां कोई नहीं है, जो मुझे देख रहा हो. अब फटाफट खिसक जा यहा से.
पर घसीटा राम का यह विचार गलत था कि उसे कोई भी नहीं देख रहा है। प्रोफैसर डबल ज़ीरो प्रयोगशाला में नहीं था, आटोमैटिक आदमी वहां पूरी निगरानी कर रहा था।
जैसे ही घसीटा राम गैस का डिब्बा ले कर वहां से चला, वह आटोमैटिक आदमी उसके पीछे लग लिया।
अरे बेड़ा गर्क़ हो इसका, यह मशीनी आदमी मेरा पीछा कर रहा है। शायद उस ने मुझे गैस का सलैंडर चुराते देख लिया है।



गाइडिड मेज़ाईल की तरह मेरे पीछे लगा है। ऐसे दुमछल्ला बन कर तो सचमुच का आदमी भी जासूसी नहीं करता। इसे डाज देने की कोई भी तरकीब काम नहीं आ रही है।
शुक्र है मोटू-पतलू का घर आ गया। अब यहां अन्दर जा कर ही जान बचेगी।
मोटू-पतलू
यहां भी आ पहुंचा। पता नहीं कौनसी कम्पनी का मोबिलआयल पीता है यह टीन का कनस्तर, जो इतनी कुशलता से मेरा पीछा कर रहा है।
मोटू-पतलू का घर मेहमानों से भरा था। लोग मोटू के जन्म दिन पर तरह-तरह के उपहार लाये थे। आटोमैटिक आदमी से जान छुड़ाने के लिये घसीटा राम ने गैस के सलैंडर वाला डिब्बा उपहारों में रख दिया
क्या याद करेगा यह लोहे का घनचक्कर किसी घसीटा राम से पाला पड़ा था। इन डिब्बों की भीड़ में इस का बाप भी यह पता नहीं लगा सकेगा कि गैस वाला डिब्बा कहां है।
खाली हाथ चले आये, उपहार कहां है तुम्हारा ?
वह बाई पोस्ट आ रहा है।
तो फिर तुम भी बाई पोस्ट क्यों नहीं आ गये ?
बड़ा माल बनाया है। इस में ख़ास चीज़ क्या है ?
सोहन हलवा !
थोड़ा सा चखाओ ना अपने मनमोहन को।

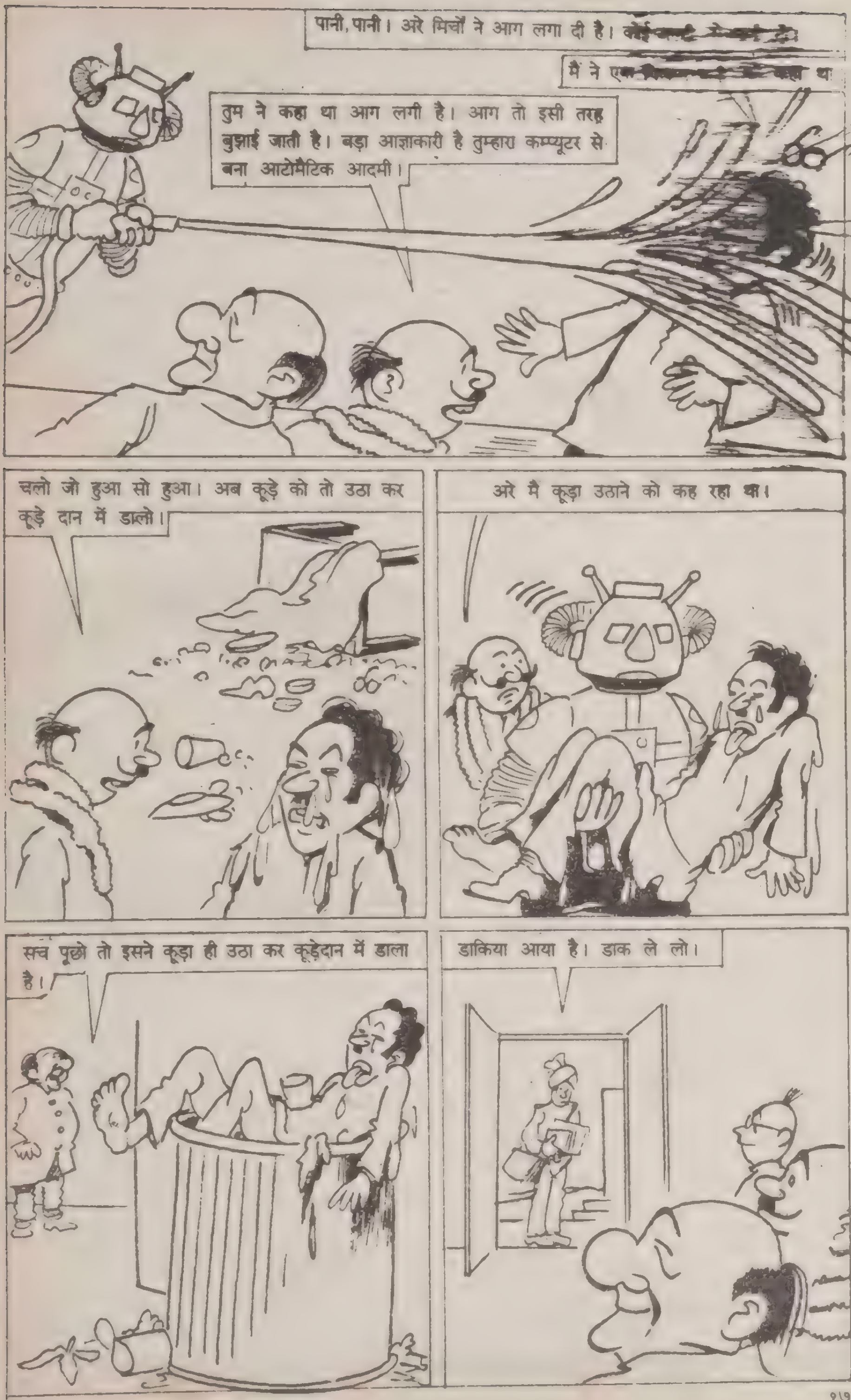


आख थू
लो खूंटी पर लटकाओगे ज़रा?
क्या हो रहा है? कौन है यह घनचक्कर
मुझे खूंटी पर लटका दिया। मैं ने तो बैंत लटकाने को कहा था।
बैंत भी तुम्हारी उंगली की खूंटी पर लटक रही है। जो कहा वही किया है इसने।
अरे यह रोबोट किस के निमंत्रण पर यहां आया है?
इसे घसीटा राम लाया है अपने साथ।
इसके खाने का तो कोई प्रबन्ध किया नहीं है हम ने।
ग्रीस की जगह मक्खन खा लेगा। मोबिल आयल मिला मिट्टी का तेल इसी कुप्पी में है इसके पीने के लिये।
और माचिस मेरी जेब में है इसे फूंकने के लिये।



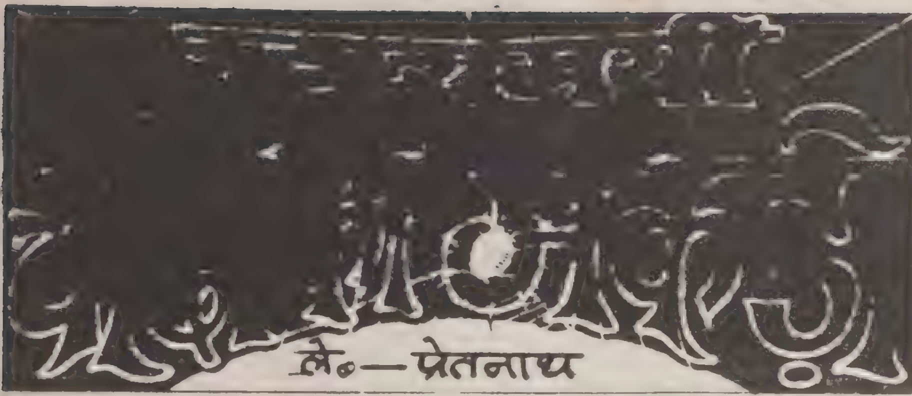
क्या है तुम्हारी जेब में चूसने के लिये? क्या लौलीपौप है?
हां दोनाली तोप है, दूं तेरे मुंह में। तेरे कान का लगा जंग कभी दूर भी होगा कि नहीं।
हर बात उलटी समझ रहा है यह लोहे का पीपा। कान में लगे जंग की बात की तो यह कान में मोबिल आयल डाल रहा है।
डाकिया आया है, डाक ले लीजिये।
धन्य हो, बधाई हो, बधाई हो।
अभी मेरा लैटर बम आयेगा तब मुर्दाबाद हो गा तुम्हारा।
यह एक शुभचिन्तक ने चार सूखी हुई गंडेरिया भेजी है। लिखा है, डाक खर्च बचाने के लिए सुखाई हैं। खाने से पहले पानी में भिगो कर फुला लें।
जब मेरा लैटर बम आएगा तब मरखपो मरखपी होगी।
इस पत्र में सूचना दी गई है कि मोटू के नाम दस हज़ार की लाटरी निकली है।
भगवान ने कितनी कृपा की है आज जन्मदिन के अवसर पर।
मेरे नाम लाटरी निकालते क्या भगवान की जान निकल रही थी।
इसके बाद केक काटा गया। सब ने मिल बधाई का गाना गाया, पर घसीटा राम मन ही मन में उल्टी बधाई दे रहा था।
हैप्पी बर्थ डे टू यू! माई डीयर मोटू!
हैप्पी डैथ डे टू यू। माई रायेवल मोटू।


बहारो फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है। मेरा महबूब आया है . . .
बहारो फूल बरसाओ . . .
इसकी मशीन में कोई गड़बड़ है क्या? वह फूल बरसाने को कह रहा है और इस ने पूरा फूलों भरा गुलदस्ता दे कर मारा है।
गाने के बाद अब खाने का नम्बर आया।
अरे कुछ बढ़िया-बढ़िया माल डालना मेरी प्लेट में।
मक्खन कहां है? मक्खन का टिन कहीं दिखाई नहीं दे रहा है।
टिमाटर की सारी सॉस तुम ही ले लोगे या कुछ मेरे हिस्से में भी आएगी? कुछ इधर भी तो डालो।
अरे मैं इधर अपनी प्लेट में सॉस डालने को कह रहा था। यह किस सर फिरे ने मेरे ऊपर डाल दी है?
BOOT POLISH
BOOT POLISH


पानी, पानी। अरे मिर्चों ने आग लगा दी है।
मैं ने
तुम ने कहा था आग लगी है। आग तो इसी तरह बुझाई जाती है। बड़ा आज्ञाकारी है तुम्हारा कम्प्यूटर से बना आटोमैटिक आदमी।
चलो जो हुआ सो हुआ। अब कूड़े को तो उठा कर कूड़े दान में डालो।
अरे मैं कूड़ा उठाने को कह रहा था।
सच पूछो तो इसने कूड़ा ही उठा कर कूड़ेदान में डाला है।
डाकिया आया है। डाक ले लो।



यह पत्र तो घसीटा राम के नाम है। यहां कैसे आ गया। पता लिखा है श्री घसीटा राम, मकान नं० ४२० गली पापड़ वाली, तरावड़ी का घाट। दिल्ली नं० ६।
मेरा पत्र आया है? भूल से यहां आ गया। ज़रूर लाटरी निकलने की सूचना होगी।
मुझे दे दो, किसी और ने खोला तो मुझ से बुरा कोई न होगा।
हे भगवान! पचास हज़ार से कम की लाटरी मेरे नाम निकली तो मुझ से बुरा कोई न होगा।
दिन भर के हंगामे में अब तक घसीटा राम अपना भेजा हुआ लैटर बम भूल गया था। घसीटा राम ने लाटरी की खुशी में वैसे यह पत्र खोला। एक ज़बरदस्त धमाके ने उस का सफाया कर दिया।
धड़ाम
जब धूल छटी। बारूद के बादल हलके हुये तो हालत यह थी।
अरे यह तो पत्र बम था।
किसने भेजा यहां?
अभी बात बात पर कह रहा था, मुझ से बुरा कोई न होगा. बताओ कोई इस से बुरा है अब



भाग - ३

"वाकई यह हमारे देश से भिन्न है, महिन्दर बोला वह अभी बालकनी पर खड़े श्याम के पास कमरे की खिड़की से निकल कर पहुँचा था। "इस शहर को देखते ही कहा जा सकता है, ये प्राचीन शहर है।"

सन् १३३८ में स्थापित श्याम बोला। श्याम ने तरानिया आने से पहले की भागदौड़ के बीच भी तरानिया तथा उसके इतिहास को पढ़ने का समय निकाल ही लिया था। "बहुत बार आक्रमणकारियों द्वारा तहसनहस किये जाने के बावजूद हर बार नये सिरे से बनाया गया। सन् १६७८ में प्रिंस पॉल द्वारा एक क्राँति को दबाये जाने के बाद यहाँ शान्ती है। हमें जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, तीन सौ वर्ष पुराना है। इस शहर के एक भाग का आधुनिकीकरण भी किया गया है, परन्तु वह दूसरी ओर होने की वजह से दिखाई नहीं देता।

"शहर के साथ कितनी खुली जगह है?" महिन्दर ने सराहना करते हुए पूछा?

"केवल पचास वर्ग मील", श्याम ने उत्तर दिया, 'ये वास्तव में ही छोटा देश हैं, देखो दूर पर जो पहाड़ियाँ दिखाई दे रही हैं! तरानिया की सरहद उनकी चोटी पर है। देश डैन्जो नदी के साथ सात मील तक फैला है। अंगूर की खेती, बढ़िया कपड़ा बनाना तथा बाहर से आने वालों का मनोरंजन करना इनका मुख्य उद्योग है। बहुत से सैलानी तरानिया यहाँ की सुन्दरता देखने आते हैं। इन सैलानियों के कारण बहुत से तरानिया के व्यापारी अपनी तरानिया की पुरानी पोशाक ही पहनते हैं, इस से यहाँ का वातावरण अधिक सुन्दर हो जाता है।

राजू माथुर कमीज़ के बटन बन्द करता हुआ कमरे से बाहर निकला तथा अपने मित्रों के साथ खड़ा हो कर तरानिया की सुन्दरता देखने लगा।

ये दृश्य कितना फिल्मी दिखाई दे रहा है, केवल अन्तर यह है कि यह असली है। "श्याम! वो वहाँ गिरजाघर कैसा है?"

"मेरे ख्याल से वो सेंट डोमिनिक का गिरजा होगा," श्याम बोला। "ये गिरजा सबसे बड़ा है और केवल इसी में सोने के गुम्बद और दो घंटों के स्तम्भ हैं। वो लम्बे सत्म्भ दिख रहे हैं न, उनमें घंटे लगे हैं। बाँयी ओर के स्तम्भ में आठ घंटे हैं जो गिरजे में प्रार्थना तथा राष्ट्रीय छुट्टियों को बजाये जाते हैं। दाईं ओर के स्तम्भ में एक अत्यन्त विशाल घंटा है जिसका नाम सेंट पॉल का घंटा है। सन् १६७८ में राजद्रोह का दमन करते हुए प्रिंस पॉल ने इसे बजाया था अपने वफादार साथियों को ये बताने के लिये कि वे जिन्दा हैं और सहायता चाहते हैं। उन लोगों ने चारों ओर से आगे बढ़ कर द्रोहियों को मार भगाया था। इसके बाद घंटे को केवल शाही परिवार के लिये ही बजाया जाता है।"

जब किसी को ताज पहिनाया जाता है तो इसे सौ बार धीरे धीरे बजाया जाता है। राजकुमार के जन्म पर इसे पचास बार और इसी प्रकार राजकुमारी के जन्म पर पच्चीस बार इसे बजाया

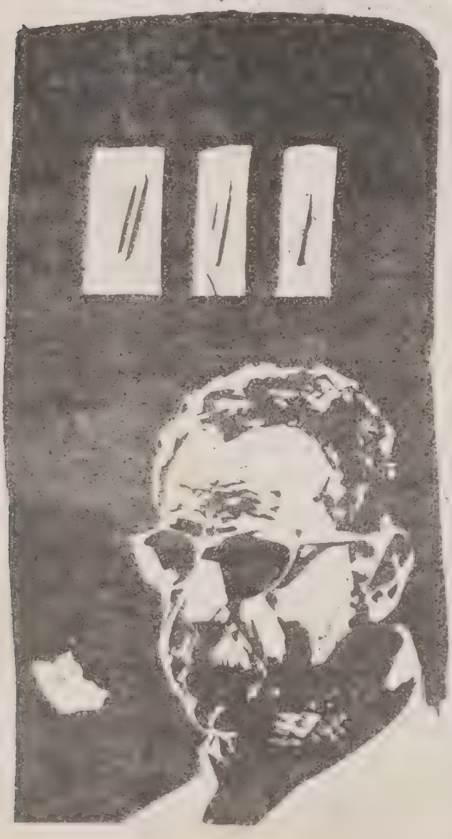
जाता है। इस घंटे की ध्वनि शहर के सभी घंटों से भिन्न है तथा इस घंटे को तीन मील तक सुना जा सकता है।

''बहुत बढ़िया पुराने रिकार्ड हैं!'' श्याम मुस्कुराया।

''हम लोगों को जोरो से मिलने के लिये तैयार हो जाना चाहिये,'' राजू बोला ''शाही प्यादे ने कहा था कि जोरो सुबह का नाश्ता हमारे साथ करेगा''।

''नाश्ते का ध्यान आते ही लगा कि भूख लग रही है, महिन्दर तुरन्त बोला, ''सोचता हूँ नाश्ता ये हमें कहाँ करवायेंगे?''

''देखो इन्तज़ार करते हैं तभी मालूम होगा,'' राजू ने उत्तर दिया। ''चलो अपनी चीजें चैक कर लें और देख लें की सब ठीक काम कर रही हैं, आखिर हम यहाँ काम से ही आये हैं। वह आगे आगे कमरे की ओर बढ़ गया। इस कमरे की छतें



ऊची थी और दिवारों पर लकड़ी लगी हुई थी जो चिकनी और चमकदार थी। छः फुट से भी चौड़े पलंग जिस पर ये तीनों पिछली रात सोये थे के सिरहाने पर शाही परिवार के अमूल्य हथियारों को सुन्दरता से बनाया गया था।

उनके बैग स्टैंड पर ही रखे थे लड़कों ने पिछली रात केवल ब्रुश और रात के पाजामें निकालने को ही खोला था। वो तरानिया तक एक हैलीकाप्टर वायुयान से पहुँचे थे। राह में पड़ने वाले शहरों को वे देख न पाये थे क्योंकि वो हवाई अड्डे से बाहर नहीं गये थे। राह में ही उन्होंने बड़े जैट वायुयान से हैलीकोप्टर में तबदीली की थी ताकि वो डैन्जो के छोटे हवाई अड्डे पर उतर सकें।

हवाई अड्डे पर प्रतीक्षा करती कार इन्हें शाही महल ले आई थी जहाँ इनका स्वागत शाही स्वागत करने वाले ने किया था। जोरो एक अत्यन्त महत्वपूर्ण गोष्ठी में थे और अभी तक इन लोगों से मिल न पाये थे। उन्होंने कहलवाया था कि वो नाश्ते के समय इन से मिलेंगे। शाही स्वागतकर्ता ने इन लड़कों को महल पहुँचने पर पत्थर से बने महल के मीलों लम्बे गलियारों से ला कर सोने के कमरे तक पहुँचाया था। तीनों जासूस थकान के कारण तुरन्त बिस्तर पर लेट कर सो गये थे और उन्होंने अपना सामान खोला न था।

अब उन्होंने सामान खोल कर ठीक से रख दिया। कपड़े उन्होंने एक लगभग पाँच सौ वर्ष पुराने संदूक में करीने से रख दिये, शायद जब महल बना होगा अलमारियों का पता न होगा। उन्होंने केवल तीन चीज़ें बाहर छोड़ी थीं। तीन कैमरे। कम से कम ये दिखाई तो कैमरे ही देते थे। थे तो ये कैमरे ही बहुत ही कुछ बड़े और कीमती, इनमें फ्लैश बल्ब के अतिरिक्त और भी बहुत से यन्त्र लगे हुए थे। इन को रेडियो की तरह भी प्रयोग किया जा सकता था, इन कैमरों के पीछे के हिस्से में बहुत ही अच्छी शक्ति वाला 'वाकी टाकी' बनाया गया था, फ्लैश बल्ब का दोहरा काम था उन्हें वायरलैस के ऐरियल की तरह भी प्रयोग किया जा सकता था, इनकी सहायता से

आवाज़ लगभग दस मील तक की दूरी तक भेजी जा सकती थी। किसी भी इमारत के भीतर से भी इसका प्रसारण दो मील तक किया जा सकता था।

इन कैमरों में लगे विशेष 'वाकी टाकी' के केवल दो ही बैंड थे तथा इनकी आवाज़ किसी भी और रेडियो या वाकी टाकी पर नहीं सुनी जा सकती थी। केवल उसी बैंड पर ट्यून किये हुए यन्त्र पर ही इसे सुना जा सकता था। इस प्रकार के रेडियो, इन तीन कैमरे रेडियों के अतिरिक्त अमरीकन दूतावास में वीरिशनाथ के पास थे। वीरिशनाथ इनके साथ ही आधे रास्ते तक आये थे और सारी यात्रा में वे उत्सुकता से बात करते रहे थे। दूसरी और बातों के अतिरिक्त उन्होंने इन्हें बताया था कि वे इन लोगों से अधिक दूर नहीं रहेंगे। दूसरे इन लोगों को हर रात्रि को उनसे कैमरा वाकी टाकी से उनसे बात-चीत करनी चाहिये। यदि कोई ज़रूरी घटना हो जाये तो दिन में भी बात-चीत कर लेनी चाहिये।

'अब आशा है तुम लोग सब कुछ समझ गये होगे, आशा है सब कुछ ठीक तरह चलता रहेगा और निरधारित समय पर जोरो की ताजपोशी हो जायेगी। परन्तु मुझे डर है, संकट दिखाई दे रहा है और आशा है इसका तुम लोग हमारे लिये पता लगा लोगे।

किसी से कुछ भी पूछताछ न करना, जैसा मैंने तुम्हें बताया है तरानियावासी विदेशियों के उनके मामलों में दखल से बहुत चिढ़ते हैं। केवल घूमते फिरते रहना, तस्वीरें लेने के बहाने हर जगह अपनी आँखें और कान खुले रख पता लगाने का प्रयत्न करना। कैमरा रेडियो से मुझे नियमित रिपोर्ट देते रहना। मैं संदेश ग्रहण करने के लिये किसी को तैनात कर दूँगा, सम्भवतः ये हमारे दूतावास में ही होगी।

शेष पृष्ठ २४ पर



नामी चोर
जमीन से चला आसमान में अटका
ऐसा करो, अबके बारी-बारी जेल से भागो। एक साथ भागने में गड़बड़ हो जाती है।
हां। अब के ऐसी तरकीब लड़ाओ कि किसी को कानों-कान ख़बर न हो और हम यहां से रफूचक्कर हो जायें।
वह खाने की वैन जेल से बाहर जाने वाली है। मैं उस की छत पर चढ़ कर यहां से साफ़ निकल जाऊंगा और किसी को कानों-कान ख़बर नहीं होगी।
FOOD SERVICE
अच्छा चेले। अलविदा!
अलविदा गुरु। भगवान तेरी रक्षा करे।
अब तू ने मार लिया मोर्चा। किसी को कानों-कान ख़बर नहीं होगी।
वाकई किसी को कानों-कान ख़बर नहीं हुई कि क्या से क्या हो गया है।

गुरू गया चेला आया



गुरू तो गया, अब मेरी बारी है। लगता है कोई आ रहा है। यहां जेल के अस्पताल में छुप जाऊं।
यहां मरीज़ बन कर लेट जाऊं तो कोई कुछ नहीं कहेगा। उल्टा सब मेरे आराम का ख़्याल रखेंगे।
चलो वह मरीज़ मर गया है। उसे ठिकाने लगाना है।
शायद मुझे मरीज़ समझ कर किसी बड़े अस्पताल में ले जा रहे हैं।
चलो इस बहाने से जेल से बाहर तो आया। मौका मिलते ही ऐसा भागूंगा कि किसी को कानों कान ख़बर न होगी।
पर यह कैसी एयरकंडीशन्ड जगह है, जहां मेरा दम घुट रहा है।

पृष्ठ २१ से आगे

अभी के लिये इतना काफ़ी है। यहाँ से आगे चलने पर तुम लोग अपने पर निर्भर रहोगे, हमसे केवल रेडियो सम्पर्क ही रहेगा। मैं दूसरे हवाई जहाज़ से तरानिया पहुँचूंगा और तुम लोगों के लिये तैयार रहूँगा। आगे का प्लैन हमें आगे की घटनाओं के आधार पर बनाना पड़ेगा। कोड के लिये तुम्हें 'पहला', दूसरा तथा रिकार्ड कहेंगे।

इसके साथ मि० वीरेशनाथ ने माथे का पसीना पोंछा, तीनों लड़कों को भी ऐसा महसूस हुआ कि उन्हें भी अपना पसीना पोंछना चाहिये वास्तव में कार्य काफी डरावना था। हर तरीके से इन्हें भारतीय सरकार के गुप्तचर कहा जा सकता था।

वीरेशनाथ की सारी बातों पर ध्यान देने पर इनकी उत्सुकता कम हो गई तथा तीनों चुप से हो गये। सबसे पहले महिन्दर ने चुप्पी तोड़ी। उसने अपना कैमरा उठा कर उसका चमड़े का खोल उतारा। कैमरे के पिछले भाग में एक बहुत छोटा सा ट्रान्जिसटरनुमा टेप रिकार्डर लगा हुआ था, जो कमरे में हुई बातचीत को रिकार्ड कर सकता था।

'जोरो से मिलने से पहले, क्या हमें वीरेशनाथजी से सम्पर्क नहीं कर लेना चाहिये ? ताकि पता चल जाये हर यन्त्र ठीक कार्य कर रहा है', उसने पूछा।

''अच्छा विचार है, दो', राजू सहमत हुआ।'' मैं बालकनी में जाकर बाहर के दृश्य की तस्वीर लेता हूँ।

वह अपना कैमरा ले कर बाहर बालकनी में चला गया। चमड़े के केस को खोल कर उसने गिरजाघर के सोने के गुम्बद की ओर कैमरे का मुँह किया। फिर उसने 'वाकीटाकी' को कार्यविन्त करने वाले बटन को दबाया।

''पहला रिपोर्ट कर रहा हूँ', उसने कैमरे पर झुकते हुए धीरे से बोला। दूर से देखने पर प्रतीत होता था वो कैमरे से तस्वीर लेने का प्रयास कर रहा है।'' पहला रिपोर्ट कर रहा हूँ, क्या आप मुझे सुनते हैं?'

लगभग तुरन्त ही एक स्वर जो तीन फुट की दूरी पर भी नहीं सुना जा सकता था सुनाई दिया। 'मै सुन रहा हूँ, वीरेशनाथ बोले कोई संदेश है?'

'केवल टैस्ट कर रहा हूँ अभी हम प्रिंस जोरो से नहीं मिले हैं नाशते पर उन से मिलेंगे।'

'मैं ध्यान रखूँगा, होशियार रहना, समाप्त और खत्म!'



'रोज़र' राजू बोला, और दरवाज़े पर दस्तक सुनते ही कमरे में आ गया।

महिन्दर ने दरवाजा खोला और वहाँ प्रिंस जोरो तीनों को देख कर मुस्कुराता हुआ खड़ा दिखाई दिया।

'मेरे मित्र! श्याम! महिन्दर! राजू! वो बोला और आगे बढ़ कर उन्हें प्रेम से गले लगा लिया। 'तुमसे मिल कर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरे देश और मेरे शहर के विषय में तुम्हारा क्या विचार है? परन्तु अभी तो कुछ देखने का ख़ास समय ही तुम्हें नहीं मिला? हम इसका शीघ्र ही ख्याल करेंगे, बस नाश्ता समाप्त करते ही''।

उसने मुड़ कर हाथ से इशारा किया।

''अन्दर आओ,'' उसने आदेश दिया मेज़ खिड़की के निकट सजा दो'।

लाल और सुनहरी रंग की शाही पोशाक पहने आठ नौकर तुरन्त अन्दर आये। वे अपने साथ मेज़ कुर्सी और बहुत सी प्लेटें इत्यादि लाये जो चाँदी की थीं। जोरो इस बीच लड़कों से बहुत प्रसन्नतापूर्वक बातचीत करता रहा। नौकरों ने मेज़ पर बहुत सफ़ेद मेज़पोश बिछाया और फिर उस पर चाँदी की प्लेटों में भिन्न-भिन्न तरह खाने की वस्तुऐं रक्खीं, साथ में दूधके गिलास लड़कों के लिये रखे गये।

'बढ़िया नाश्ता दीखता है', महिन्दर बोला, 'मुझे बहुत भूख लगी है।' 'सही कहते हो', जोरो बोला, 'चलो पहले हम सब नाशता कर लें, श्याम आओ, तुम क्या देख रहे हो?'

श्याम मकड़ी के एक बड़े जाले को घूर रहा था, ये जाला केवल दो फुट की दूरी पर, पलंग से कमरे केएक कोने तक बनाया गया था।एक बड़ी सी मकड़ी उसमें से श्याम को घूर रही थी। श्याम सोच रहा था कि जोरो के नौकर तो बहुत हैं, परन्तु सफाई कुछ ठीक नहीं है।

''मैने अभी एक मकड़ी का जाला देखा है, मै इसे साफ़ कर देता हूँ।' ये कह कर वह जाले की ओर बढ़ा। परन्तु इससे पहले कि श्याम जाले के निकट पहुँचे प्रिंस जोरो ने श्याम को धक्का दे कर पृथ्वी पर गिरा दिया, श्याम हैरान रह गया।

महिन्दर और राजू भी हैरान से जोरो को देख

(शेष पृष्ठ ४१ पर

छाते नये निराले

पारम्परिक छातों में नवीनीकरण के कुछ सुझाव जिन्हें अपना कर दीवाने छाते निर्माता अपने कम्पीटीटरों को जमीन सुंघा सकते हैं।




डंडी में मिनी ट्रांजिस्टराइज्ड रेडियो फिट हो। छाता खोलते ही स्वतः ऑन हो जाये और छाता बन्द करने पर खुद ऑफ हो जाये। वर्षा में खड़े खड़े मनोरंजन ही होगा।
प्रायः देखा गया है कि वर्षा से बचने के लिये दो युवा एक छाते के नीचे पनाह लें तो प्यार हो जाता है। छाते के कपड़े के भीतरी सतह पर मोटे अक्षरों में प्यार के डायलाग छपे हों। ताकि प्रेमी नर्वस हो जायें तो छपे डायलाग प्रांपटिंग का काम करें।
छातों के ऊपरी नोक पर मिनी वर्षा मापक यंत्र फिट हो। कितना मजा आयेगा जब वर्षा बन्द होगी आप छाता बन्द कर रीडिंग ले लेंगे। और पता लग जायेगा कितने मिलीमीटर वर्षा हुई।

क्यों और कैसे

पारम्परिक छातों

सबसे बड़ा ज्वाला-
ँ फटा था।
द्र सिंह, नैनीताल।
ी ऐसे प्रश्न की चर्चा
ष्ट कर देना चाहिये
हास में से है। अर्थात
आँकड़े हमारे पास



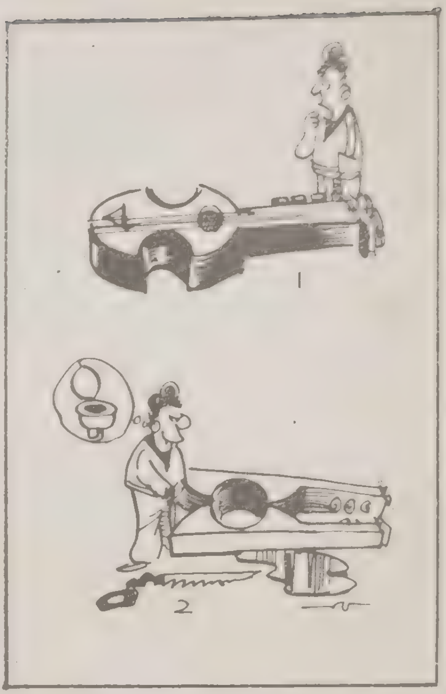
समय में जब कि प्रकृति
वा का निर्माण कर रही थी बहुत विशाल ज्वालामुखी फटे होंगे और भयंकर भृकम्प आये होंगे। परन्तु जहाँ तक इतिहास के रिकार्ड से हमें पता है, सबसे बड़ा ज्वालामुखी सन् १८८३ में डच ईस्ट ईन्डीज़ में काराकोंटा द्वीप (इन्डोनेशिया गणतन्त्र में) पर फटा था। उस वर्ष २७ अगस्त के प्रातः काल में सबसे भयंकर विस्फोट हुआ था।

आइये इस अनोखे भयंकर विस्फोट के प्रभावों के बारे में जानकारी लें।

सबसे पहले इस द्वीप का नीचे का उत्तरी भाग पूरा का पूरा अलग हो कर फट गया था। विस्फोट से पहले द्वीप का क्षेत्र १८ वर्ग मील था तथा ये ३०० से १४०० फीट समुद्र से ऊपर था।

विस्फोट के उपरान्त महासागर के तले में एक छेद हो गया जो कि समुद्र की सतह से १००० फीट नीचे तक चला गया।

धूल, पत्थर और राख के स्तम्भ हवा में १७ मील की ऊँचाई तक उठ गये और जैसे ही ये वस्तुऐं हवा में फैलने लगीं इन से १५० मील की दूरी पर भी दिन में रात के समान अंधेरा छा गया था। इस विस्फोट की वास्तविक आवाज़ बहुत दूर तक के क्षेत्र में सुनाई दी थी, वास्तव में इस विस्फोट की



गूँज सबसे अधिक दूरी ३००० मील तक पहुँची थी।

सम्भव है इस विस्फोट द्वारा सबसे अधिक हानि महासागर से उठी भयंकर लहरों के कारण हुई होगी। इन में सबसे बड़ी उठने वाली लहर ५० फीट की ऊँचाई तक उठ गई थी, इन्होंने पूरे के पूरे गाँवों को तहस नहस कर दिया था तथा ३६,००० मनुष्यों की जान लेली थी। ये लहरें भी बहुत दूर दूर तक पहुँची थीं और हो सकता है इंगलिश चैनल में भी पहुँची हों। इंगलिश चैनल यहाँ से ११०० मील दूर है।

प्रसंगवश काराकोटा ज्वालामुखी सन् १९२७ में दुबारा सक्रिय हो उठा था परन्तु भाग्यवश ये अधिक बड़ा ज्वालामुखी विस्फोट नहीं हुआ।

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



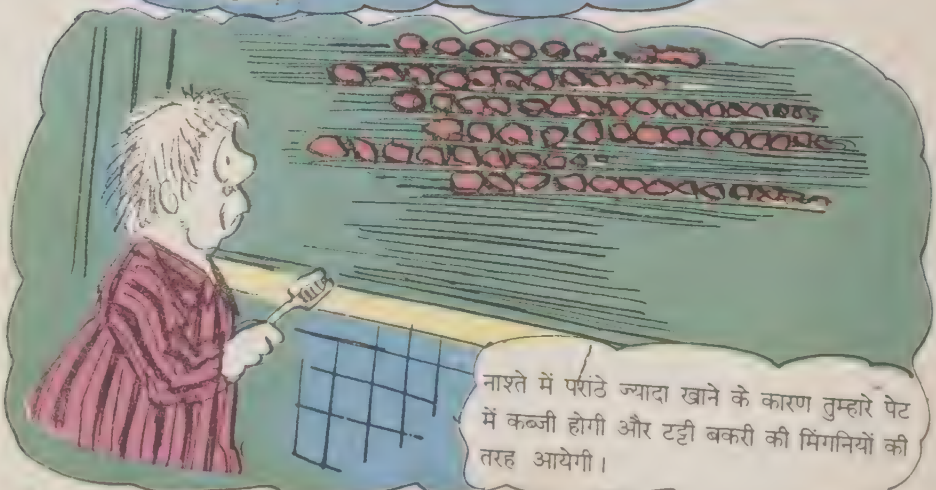
मदहोश
वाह ! क्या बदतमीजी है ! ना जान न पहचान जुबान निकाल कर मुझे चिढ़ा रहा है
मै चुप क्यो रहू ? मै भी इसी भाषा मे जवाब देता हूं
ऊऽऽऽ
मदहोश होश में आ !
मेरे बैल्ट की बक्कल को देख कर क्या बोल रहा है ? होश में है ?

Rashtriya

बादल विचार

स्वप्न, कोई अंक, राशि, किसी फूल का नाम, रेखायें तथा प्याली में पड़ी चाय की पत्तियों को देख भविष्यवाणी की जा सकती है और शायद आपको पता न हो कि बादलों के प्रकार व उनकी आकृति को देख भी भविष्यवाणी की जा सकती है। कुछ नमूने पेश हैं:






तुमने अलमारी में अलमोड़ा में खरीदी जो टोपी रखी है, उसे चूहे कुतर जायेंगे।
शाम को चाय बगैर दूध के पीनी पड़ेगी। भगोने में जो दूध रख आये हो उसे बिल्ली खिंडा देगी।
निकट भविष्य में कोई तुम्हें मोतियों का हार देने का झूठा वायदा कर अपना मतलब निकाल जायेगा।



रवि भाटिया, शंकर रोड मार्किट : मेरी प्रेमिका आपस् दोस्ती करना चाहती है बताइय मैं क्या करूं ?

उ० : पहले साफ-२ यह बताइये चक्कर क्या है ? वह आपसे पीछा छुड़ाना चाहती है या आप उससे पीछा छुड़ा रहे हैं ?

सुशील चक—इलाहाबाद : गरीब चन्द जी आपकी बिरादरी वालों न मरी दुकान में ऊधम मचा रखा है उनको अपन पास बुला लीजिए।

उ० : ऐशियाई खेलों क लिये नयी दिल्ली में अभी स्टडियम पूरे तैयार नहीं हुये हैं तब तक आप खेल भावना का परिचय देते हुये उन्हें अपनी दुकान में ऊधम मचाने दें।

नरश गुलाटी 'दीपिका'—तिलक नगर : गरीब, आजकल आप हमस बड़ नाराज़ हैं जा हमार पत्रों का उत्तर नहीं दत।

उ० : इतने नाराज़ मत होईये। वित्त मंत्रालय का पता लग गया ता अगल साल नाराज़गी पर टैक्स लग जायेगा।

रविन्द्र नाथ सरीन—लुधियाना : क्या आपने घड़ियाली आंसू देखे हैं ?

उ० : यह तो ऐसे ही है जैस भारत में काई पूछे कि आपने कहीं गरीबी देखी है ? भाई मेरे, आपने क्या घडियाली आंसुओं के इलावा यहां कहीं बघड़ियाली आंसू भी देखे हैं ?

सुदामा धर्मेन्द्र दुर्धा—रायपुर (म.प्र.) : गरीब चंद जी, आप हम पाठकों को अपनी शादी का मुँह मीठा कब करा रहे हैं ?

उ० : मेरी चुहिया फ्रैंड आधुनिक विचारों की है। आपके कार्ड में शादी का ज़िक्र पढ़ उसने कड़ुवा सा मुंह बना लिया है। अब आप ही बतायें कि मैं क्या शादी का मुंह मीठा करवाऊं ?

एम. एस. गुजराल—एन. आई. सी. करनाल : गरीब चन्द जी, आज कल आप दिखाई नहीं दे रहे क्या आपके बिल के बाहर बिल्ली बैठी है जो आप बाहर नहीं आ रहे।

उ० : आप गलत नम्बर का चश्मा लगा कर शायद देख रहे होंगे। मैं तो रोज बाहर आता हूं। हां इतनी बात ज़रूर है कि बाहर आते समय बैंड बाजे नहीं बजवाता।

डा० सतीन्द्र जैन 'सुदर्शी'—जेबरा (म.प्र.) : गरीब चन्द, क्या आप ही भगवान गणेश की सवारी थे ?

उ० : वह कोई और होगा ! किसी को पीठ पर बिठाना तो दूर रहा मैं तो नाक पर मक्खी तक नहीं बैठने देता।

'मो० जहांगीर मैन रोड—राँची (बिहार) : गरीब चन्द जी, जब भी मैं बाजार से दीवाना का नया अंक लाता हूं तो हमारी प्यारी बिल्ली दीवाना में आपका फोटो देख कर खुश हो जाती है मगर दूसरे दिन से आपका फोटो गायब रहता है। क्या करूं उपाय बताएं ?

उ० : मेरे फोटो की आत्मा की शांति के लिये कुंवारी कन्याओं को चाट और दही भल्ले खिलायें।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

युवा क्रिकेटर कीर्ति आजाद आंकड़ों के दर्पण में

जन्म : २ जनवरी १९५९, पूर्णिया, बिहार; आलराउंडर; दायें हाथ के मध्यक्रम के बल्लेबाज और ऑफ-ब्रेक गेंदबाज; निवास : दिल्ली; भारत के १५२ वें टेस्ट खिलाड़ी.

शुरुआत	मैच	पारी	नाबाद	कुल रन	उच्चतम स्कोर	औसत	शतक	अर्ध शतक	शून्य	कैच/स्टंप	गेंद	मेडेन ओवर	रन	विकेट	औसत	श्रेष्ठ गेंदबाजी
टेस्ट — न्यूजीलैंड के विरुद्ध वेलिंगटन में, १९८०-८१	१	२	–	३६	२०	१८·००	–	–	–	–	६	–	५	–	–	–
रणजी — पंजाब के विरुद्ध अमृतसर में, १९७७-७८	१६	२०	२	६८८	१३०	४१·५६	२	३	–	८	८६२	३५	३७०	२२	१६·८२	२८ रन [illegible] विकेट जम्मू-क[illegible] [illegible]-८१
दलीप — उत्तरक्षेत्र के लिए पूर्व क्षेत्र के विरुद्ध कलकत्ता में, १९७८-७९	१	१	–	३४	३४	३४·००	–	–	–	–	३०	२	१२	१	१२·००	१२ रन [illegible] विकेट
ईरानी — चैंपियन दिल्ली की त[illegible] से शेष भारत के खिलाफ, १९८०-८१	१	१	–	९४	९४	९४·००	–	१	–	–	१८०	१	९१	१	९१·००	७२ रन
प्रथम श्रेणी के अन्य मैच — एम. सी. सी. के विरुद्ध नागपुर, १९७६-७७ से	५	११	१	३३०	१२७ नाबाद	३३·००	१	१	–	६	९६०	४३	३५४	१६	२२·१३	५० रन दे कर ६ विकेट न्यूजीलैंड में ओटागो के विरुद्ध, १९८०-८१
कुल योग २४ अप्रैल १९८१ को	२८	३५	३	११८२	१३०	३६·९४	३	५	–	१४	२०३८	८१	८३२	४०	२०·८०	

सवाल यह है?

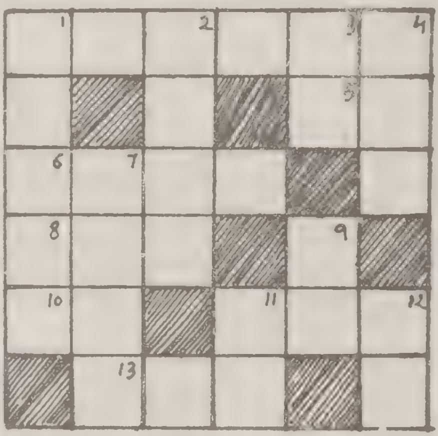


सवाल यह है?
ग्राहक से इस तरह बदतमीज़ी से पेश आते हैं! जाओ, उस से माफ़ी मांगो।
जवाब हाज़िर है:
सर, मैंने आप से कहा था नर्क में जाओ।
मैं अपने शब्द वापस लेता हूं। अब आप वहां न जाइये।
सवाल यह है?
तुम इतने अच्छे पेंटर हो कि मेरा जी चाहता है कि तुम्हारी एक पेंटिंग अपने साथ ले जाऊं।
जवाब हाज़िर है:
वह तो तुम ले ही जा रहे हो, तुम मेरे रंगों पर बैठ गये थे।
सवाल यह है?
क्या यह स्याही बहुत कीमती है?
नहीं तो! क्यों, क्या बात है?
जवाब हाज़िर है:
इतनी कीमती नहीं है तो पता नहीं क्या बात है
यह स्याही सोफे पर, डबल बैड पर और कालीन पर
गिरा दी तो मम्मी मुझ पर बहुत नाराज हो रही हैं।


जो लाजवाब है?
सवाल यह है ?
क्या तुमने खांसी की वह दवा ली, जो मैने तुम्हें दी थी ?
जवाब हाजिर है :
नहीं ! उसका स्वाद
खांसी पसन्द है।
सवाल यह है ?
मेरी बात याद है बेटे ! मुसीबत में सदा मुस्कुराना चाहिये।
जवाब हाजिर है।
इसीलिये तो
भी मुस्कुरा रहा हूं मम्मी !
सवाल यह है :
बताओ वह कौन सा जानवर है, जो
क्या सवाल पूछा है ! लगता है
और सवाल हाजिर है
उसे क्या यह बात पता नहीं है

वर्ग पहेली

१० रु. इनाम जीतिए



संकेत

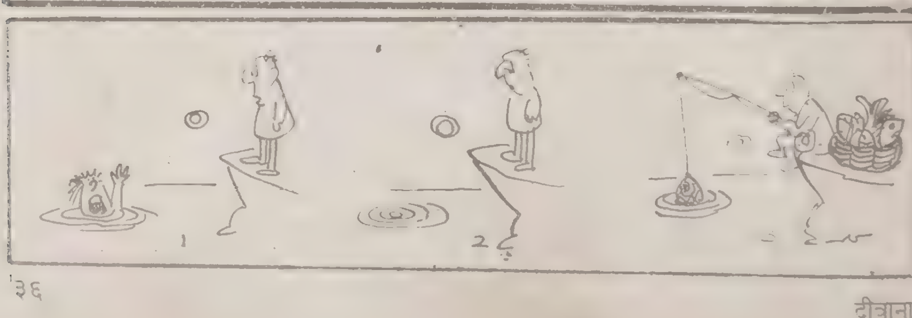
बायें से दायें

१. यह उड़नपखेरु आज़ाद नहीं है। (३, १, २)
५. बेझिझक यहाँ लाली नहीं छाती। (२)
६. खूनी जो बीच में भगवान का नाम लेता है? (४)
८. इसमें सुई कुछ दिखाती है। (३)
१०. उल्टी छाती। (२)
११. लम्बा रास्ता छोटा करने के लिये सिगरेट? (३)
१३. यह हजरत एक जगह नहीं टिकते क्योंकि इन्होंने थोड़ा सा फल हजम कर लिया है। (३)

ऊपर से नीचे

१. ऐसा करना पीछे लगा रहना बंद करता है। (२, ३)
२. यह सतह को खुरच कर साफ करने के काम आता है। (४)
३. काम में रुकावट डालने के लिये इसे अड़ाना पड़ता है। (२)
४. जबरदस्ती कब्ज़े में लिया के बीच लड़की पड़ जाये तो भीतरी भाग नंगा करना। (३)
७. नई दिल्ली की शुरुआत इस पहाड़ी से। (४)
९. उसका नाना शारीरिक रूप से सम्पूर्ण नहीं है। (२)
११. दो लायनों के पैर (२)
१२. इसे खाकर कोई जीत नहीं सकता (२)

अन्तिम तिथि—११-७-८१




सिलबिल पिलपिल
वर्ग पहेली
चूहे तूने मेरा ध्यान आज तक इस तरफ क्यों नहीं खेंचा कि वर्ग पहेलियां हल कर बड़े पैसे कमाये जा सकते हैं। यहां छपी वर्ग पहेली का प्रथम पुरस्कार ७५०० रुपये है। मैं इसे भर कर भेज रहा हूं। दुनिया में चारों ओर पैसे बिखरे पड़े हैं बस उठाने वाला चाहिये।
जभी तो मैं थैला लेकर आपके पीछे २ चलता हूं।
मैंने सोचा तो कई बार कि चौधरी साहब का ध्यान इस तरफ खेंचा जाये लेकिन कोई इस लायक रस्सी नहीं मिली क्योंकि आपका ध्यान खेंचने के लिये उतना जोर तो लगता ही जितना भैंस का कटड़ा खींचने में लगता है।
हल करते-करते कहीं ट्रक्टर न कर देना। कुछ प्रथम पुरस्कार औरों के लिये भी छोड़ना।
तू मुझे डिस्टर्ब मत कर! एक पेचीदा संकेत हल कर रहा हूं!
भाई जी आपको पता है कि मैं आजकल क्या कर रहा हूं?
सबको पता लग गया है। मैंने पोस्टमैन को सरसों के तेल का डिब्बा खरीदने के लिये बीस रुपये भी दे दिये हैं वह मालिश करके कसरत करेगा। उसके सिर भारी काम आने वाला है। तेरे चैक और पुरस्कारों के मनीऑर्डर ढोते २ कमर दोहरा हो जायेगी उसकी।


एक छोटी सी पहेली और उसकी इतनी बड़ी सज़ा कहीं से सही हल का पता नहीं लग रहा है। घर में बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। बाहर जाकर देखना पड़ेगा कि क्या, कहां और कैसे समस्या हल हो सकती है। बुशर्ट पहन कर आने-जाने वाले लोगों से सलाह मशविरा करना पड़ेगा। इसी का नाम प्रजातंत्र है।
भापा जी सत सिरी अकाल
सतश्री अकाल! ओये फुम्मना तू कौन ऐ?
मैं एक सर्वे कर रहा हूं एक सवाल पूछना चाहता हूं?
पुच्छ लै।
मेरे ओपिनियन सर्वे का एक ही सब्जैक्ट है। स्वाल यह है कि जवानी में हसीना कम खाती है कि गम?
हसीना? हो आऊं आऊं, आऊं आऊं . . . बबबबबबं


बल्ले ओये कहां है हसीना जल्दी बता हमको ? हम हसीना का पता पूछ रहा है तुम को पसीना आ रहा है।
वही हसीना जिसके बारे में तुम कह रहा था कि कम खाती है। ओये हम उसको लस्सी पिला-पिला कर मोटी कर देंगे।
कौन सी हसीना ? मैं किसी हसीना को नहीं जानता।
कैसा जमाना आ गया है ! आजकल किसी से कोई बात पूछना भी गुनाह है, लोग उल्टे-उल्टे मतलब निकाल लेते हैं।
देखा ?
बुजुर्ग लोग ठीक ही कहा करते थे कि आजकल वही गुजारा चला सकता है जो कुत्ता बन सकता है।



अगले अंक में सवाल का जवाब

पृष्ठ २५ से आगे

रहे थे, उसने आगे बढ़ कर तुरन्त श्याम को उठाया। वह जल्दी-जल्दी बोल रहा था।

'पहले ही मुझे तुम लोगों को सचेत कर देना चाहिये था परन्तु मुझे समय ही नहीं मिला। शुक्र है मैंने तुम्हें मकड़ी का जाला तोड़ने से समय पर रोक लिया, वरना मुझे तुरन्त तुम्हें वापिस तुम्हारे देश भेजना पड़ता। मैं जाला देख कर बहुत ही प्रसन्न हुआ हूँ, ये शुभ शकुन है। इसका अर्थ है तुम मेरी सहायता कर पाओगे'।

फिर उसने अपनी आवाज़ धीरे कर ली मानों उसे किसी के सुन लेने का डर हो। फिर वह अचानक दरवाज़े के पास गया और उसे खोल दिया। लाल जैकेट पहने एक बहुत ही रौबीला आदमी काले बालों और बड़ी मूछों वाला दरवाज़े के निकट खड़ा सावधान खड़ा था।

'हाँ, बिलकीज़ क्या है ? जोरो ने पूछा !

'मै केवल इसलिये खड़ा था कि शायद श्रीमान् को किसी चीज़ की आवश्यकता हो', आदमी बोला।

'अब कुछ नहीं चाहिये, अब यहाँ से जाओ और आधे घंटे में प्लेटें वगैराह लेने आना, जोरो गुस्से से बोला। आदमी ने दुबारा झुक कर सलाम किया और मुड़ कर बड़े हाल से हो कर चला गया।

'जोरो ने दरवाजा बन्द कर लिया और फिर वह निकट आ कर धीमी आवाज़ में बोला।

'ड्यूक स्टीफन का एक आदमी है, वह हमारी बातें सुनने का प्रयास कर रहा होगा। मुझे तुमसे एक बहुत ज़रूरी बात करनी है। मुझे तुम्हारी सहायता चाहिये। तरानिया की चाँदी की मकड़ी चुरा ली गई है।''

जोरो का समझाना—

'मुझे तुम लोगों को बहुत कुछ बताना है, जोरो बोला.' इसलिये अच्छा होगा कि हम पहले नाशता कर लें बाद में बात करना आसान होगा'।

और उन लोगों ने खूब ही मन भर कर खाया, फिर नौकरों ने आकर मेज़ कुर्सी और प्लेटें इत्यादि हटा दीं। अच्छी तरह से देख कर की बिलकीज़ आसपास कहीं नहीं है, जोरो ने कुर्सी खिड़की के



निकट सरका ली और बात करनी शुरू की।

मुझे तुम्हें तरानिया का इतिहास बताना है। 'सन् १६७८में जब प्रिंस पॉल की ताजपोशी होने वाली थी हमारे देश में विद्रोह हुआ और उन्हें छुपना पड़ा। उन्होंने गाने बजाने के साधारण परिवार में शरण ली। उन्होंने अपने जीवन की परवाह किये बिना प्रिंस पॉल को अपने घर की दुछत्ती में छुपा लिया। प्रिंस पॉल अवश्य ही पकड़ लिये जाते क्योंकि विद्रोहियों ने सब घरों में ऊपर नीचे बहुत ढूंढ़ मचाई परन्तु क्योंकि लगभग उनके दुछत्ती में घुसते ही एक मकड़ी ने दुछत्ती के दरवाज़े पर अपना बड़ा सा जाला बुन लिया जिसको देख कर ऐसा प्रतीत हुआ इस दरवाजे को बहुत दिन से हिलाया नहीं गया है। विद्रोहियों ने जाला देखा और अन्दर कुछ न समझ कर वहाँ नहीं ढूंढ़ा और इस प्रकार प्रिंस पॉल की जान बची।

क्रमशः


फैण्टम-जंगल शहर
देखो ! बालकनी पर कोई नहीं है।
अरे !
मेजर . . .
?
!
!
बाहर यहाँ कोई नहीं है। जनरल . . ऊंह !
सिपाहियों को बेहोश नहीं होना चाहिये, सिपाही।
मेजर करोटा . . . !
क्या हो रहा है ?
मेजर तुम से मिलते रहेंगे।


इन के गाल पर खोपड़ी का चिह्न !
फैन्टम का चिह्न !
फैन्टम . . .यहाँ ! उसने तुझे ढूंढ लिया।
जनरल बाबाबू तुम बेचैन दिखाई दे रहे हो !
कुछ खाने से बेचैनी हो गई क्या ?
!
बाबाबू तुम फैन्टम से पहले मिले हो, ठीक ! उसने मेरा बुद्धू बनाया था ! परन्तु इस बार ऐसा न होगा। वह इस महल से निकल कर भाग न पायेगा। अब तो तुम दोनों ही मेरे पंजे में हो।
और मै तुम दोनों को साथ ही मार दूँगा। महल को ऊपर से नीचे तक छान डालो।
फैन्टम को ढूंढ निकालो, देखते ही गोली मार दो मार दो ! मार दो !
जो आदमी मर नहीं सकता उसे तुम कैसे मार दोगे। चलता फिरता भूत . . .
लुआगा को इस साँपों के गड्ढे से बाहर सुरक्षित निकालना है। . . .


सारजैट, तुम्हारे आदमी तालाशी क्यों ले रहे हैं ?
?
श्रीमान् ये टुकड़ी बाम्बसी की है, हम चलते-फिरते भूत को नहीं मार सकते !
तुम तलाशी लोगे . तुम देखते ही गोली चला ओगे . . नहीं तो तुम सब गोली चलाने वाली टुकड़ी द्वारा मारे जाओगे !
!!
डरपोक ! तुम लोग फौजी हो या खरगोश हो ?
फैन्टम से डरते हो ?
नहीं, जनरल हम डरते नहीं है।
हमें वह अच्छा लगता है, वह हम लोगों का मित्र है।
!!
श्रीमान् राष्ट्रपति जी।
किट !
ओह ! तुम्हें देख कर मुझे खुशी हुई है।
तुमने मुझे ढूंढ़ा कैसे ?
एक लम्बी कहानी है, फिर कभी रात को खाने के समय बताऊँगा !
आह ! तुम कैसे सदा बिलकुल ठीक समय पर पहुँच जाते हो ?
अभ्यास !
यह लो . . .शायद आपको जाने से पहले इसकी ज़रूरत पड़ जाये, बाबाबू मुझे ढूंढ़ने का प्रयास कर रहा है।
मैं उसकी सहायता करता हूँ।

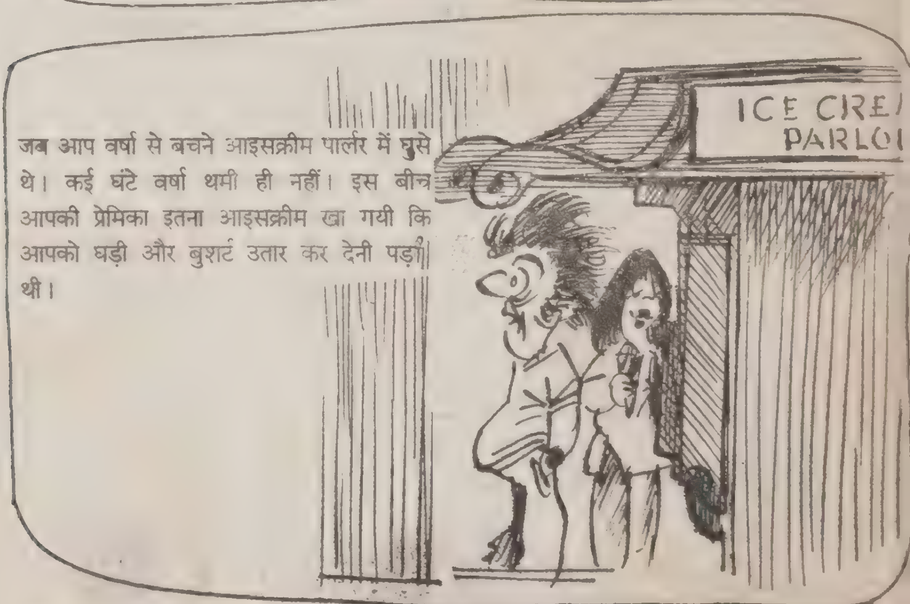

आदिमयुग
क्या खबर छपी है शिलालेख में आज ?
लिखा है कि पड़ौस के जंगल का सरदार अमरीका के जंगल से पत्थर और लाठियां मंगा रहा है। वह ऐटम देवता की चट्टान पर बम सॉरस की बलि भी देने वाला है।
हमारे जंगल पर चढ़ाई करना चाहता है ?
नहीं। उसका कहना है कि उसकी गुफा के पिछवाड़े में रूस के जंगल से आये भालू उत्पात मचा रहे हैं। उसका रातों का सोना तक हराम हो गया है। वह कभी-कभी उस पर पत्थर भी फैंकते हैं। बच्चे डर के मारे दिन को भी गुफ़ा से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं।
और अपने जंगल की क्या खबर है ? सब कुछ ठीक ठाक है ?
यहां भी मामला गड़बड़ है। हमारा जंगली सरदार दूर के जंगलों में सैर करने जाने वाला था न ! जिस भैंसे भकालू पर चढ़ कर उसको जाना था उस भैंसे की पिछली टांगों की नसें किसी ने काट दीं। इसमें किसी विदेशी जंगली के हाथ होने का संदेह बताया जाता है।

जिन्दगी भर

न भूलेगी वह

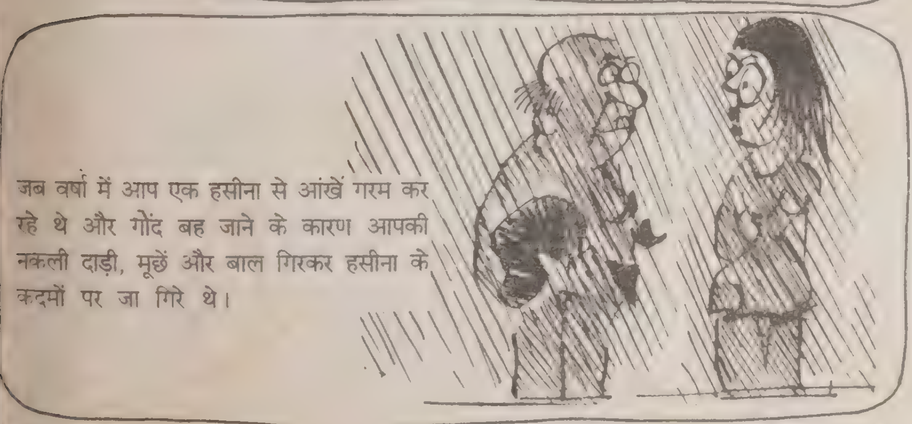
बरसात की रात





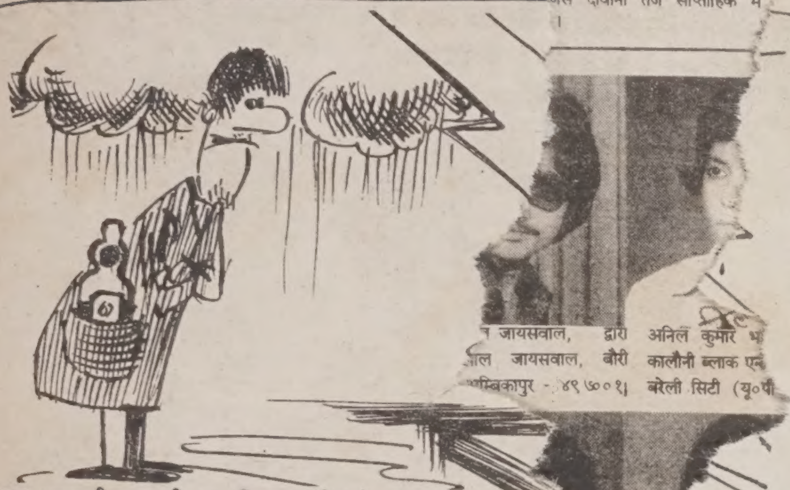

जब तीन दिन लगातार वर्षा होती रही थी और घर में आप सास और बीबी के साथ फंसे रह गये थे। उन तीन दिनों में दोनों ने मिल कर आपकी एक-एक बुराई की बाल की खाल उधेड़ कर रख दी थी।


जब बड़े जोर शोर से अपनी पत्रिका का वर्षा विशेषांक निकालने की अपने तैयारी की थी लेकिन आफिस में भारी वर्षा से पानी भर जाने के कारण विशेषांक न निकाल सके थे।
मासिक
नगाड़ा


जब वर्षा में आप एक हसीना से आंखें गरम कर रहे थे और गोंद बह जाने के कारण आपकी नकली दाड़ी, मूछें और बाल गिरकर हसीना के कदमों पर जा गिरे थे।


जब आप प्रेमी से मिलने गईं थीं। तेज वर्षा में आपका सारा मेकअप घुल गया था और आपका प्रेमी चिल्लाता भाग खड़ा हुआ था।
जब मॉडॅल टाऊन में बाढ़ आयी थी और वह लड़की जिससे बात तक करने की आपको हिम्मत न पड़ती थी पलंग समेत बह कर आपके कमरे में आयी थी।
जब सड़क पर बीबी आपके साथ झगड़ रही थी इतने में जोर का अंधड़ आया और छाते समेत आपकी बीबी को झटके से उड़ा कर ऐसे ले गया कि आपके आज तक उसका कोई पता नहीं लगा कि गई कहां।

गे छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए
जसे दीवाना तेज साप्ताहिक में
।



जब एक बरसाती घुमड़ती रात फिर घर देर से पहुंचे थे दोस्तों के साथ शराब पीते रहे थे। बीबी ने खरी खोटी सुनाने के लिये मुंह खोला ही था कि उस पर बिजली गिर पड़ी थी। उसे पैरालीसिज़ हो गया और तब से एक शब्द भी नहीं बोल सकी है।

जब गली व कमरे में पानी कमर तक भर आया था। रात को आप देर से घर गये। बीबी दरवाजे पर इंतजार कर रही थी और आप पानी के नीचे ही नीचे से डाइव मारते हुये कमरे में पहुंच कर सो गये थे।



भाप प्रेमी से मिलने गई
सारा मेकअप घुल गया
ल्लाता भाग
आ था।

ना फ्रैंड्स क्लब



राजू तुल... स्वीट भं... (राज.), १७ ...



८७ विजय ... (यू०पी०), १६ वर्ष, ...लना, दीवाना पढ़ना।



त्रिगुण सैन गुप्ता, चोरी चौरा गोरखपुर, १३ वर्ष, क्रिकेट खेलना।



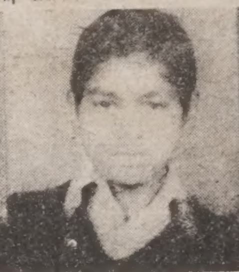
सतीश चन्द्र पाण्डेय, पाण्डेय भवन १०९, चौथियाना राजा का किला मैनपुरी (उ०प्र०), १७ वर्ष।



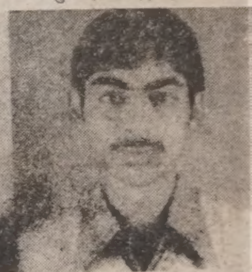
वीरेन्द्र कुमार वर्मा, ६५ धर्मदास स्ट्रीट [illegible]-३, १८ वर्ष, पेंटिंग व गाने सुनना।



विनय वर्मा, जे० टी० ए० क० यू० २१, मउभंडार, सिंहभूम ८३२१०३, २१वर्ष, डांस, बच्चोंसेदोस्ती।



ओम प्रकाश, सावन न्यूज एजेंसी, सितार गंज (नैनीताल), १० वर्ष, क्रिकेटखेलना।



अमर नाथ चौधरी, २६१, ढक्का किंग्जवे कैम्प, दिल्ली- ११०००९ १९ वर्ष, तैराकी करना।



पवन कुमार, गणेश आटोमोबाइल्स सितारगंज (नैनीताल), १३ वर्ष, क्रिकेटखेलना, घूमना।



जेन नन्द सिन्धि, विजय नगर, अनाड़ी पान भण्डार, १६ वर्ष, नावलपढ़ना।



सतीश कुमार मित्तल, मित्तल उपन्यास घर, मनिहारों का रास्ता, जयपुर, १८ वर्ष, किताबें पढ़ना।



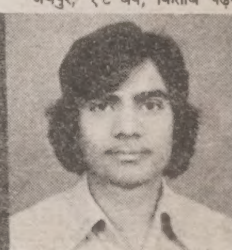
रेशम श्रेष्ठ, के० एम० होस्टल, ३ जी० टी० सी० वाराणसी कैन्ट, ... वर्ष, दीवानापढ़ना, पत्रमित्रता।



ओम प्रकाश अम्बस्ट, रेलवे क्वाटर लखी सराय, क्वाटर न० १९/बी लखीसराय, १८ वर्ष।



अमर दीप गुरुड़, मैरहवा हाई स्कूल सिद्धार्थ नगर, भैरहवा (नेपाल) लुम्बिनी, १८ वर्ष, बॉक्सिंग।



राजू सागर, मकान न० २३०, नौलक्खा सदर बाजार आगरा कैन्ट, २० वर्ष, क्रिकेट खेलना।

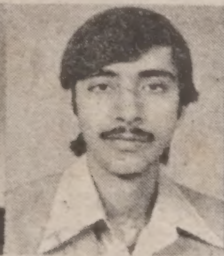


उमा शंकर प्रसाद, सुर... जर्दा फैक्ट्री, गया (बिहार), २... वर्षपत्रमित्रता, पढ़ना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।



अनिल धवन, १५९, गली कूटा जट निम वाला चौक, लुधियाना, १६ वर्ष, लड़ाई झगड़ा।



तारकेश्वर पान्डे, ई-२ दिल्ली हवाई अड्डा, पालम दिल्ली-१०, १८ वर्ष, मार-धाड़ करना।



लखन लाल जायसवाल, द्वारा शाम लाल जायसवाल, बौरी पारा-३, अम्बिकापुर - ४९७००१।



अनिल कुमार भारती, न्यू रेलवे कालौनी ब्लाक एन्ड रुम न० ३१४ बरेली सिटी (यू०पी०) १८ वर्ष।



सुनील कुमार अग्रवाल, ४/१४ डालीबाग कालोनी, लखनऊ, १९ वर्ष, पढ़ना, बैडमिंटनखेलना।



सुरेश रामचन्द तारानी, भवानी वाच हाउस, अर्थ, पुस्तकेंपढ़ना। सवारी करना।



साजिद अली सिद्दी की, २५/२ जोगा बाई जामियां नगर नई दिल्ली, १३वर्षगानेगाना।



विजय प्रकाश गुप्ता, के द्वारा गुप्ता होटल, दयालचन्द, बिलासपुर म०प्र०, २० वर्ष, दीवाना पढ़ना।



सन्तराम धीमान, ग्राम बसेड़ा, जिला: मुजफ्फरनगर, १७ वर्ष, नयी-चीजों की जानकारी करना।



शमिम अहमद शमिम (अध्यक्ष व सम्पादक), शमा रेडियो लिस्नर्स क्लब, एच-६३८ सेक्टर-१५।



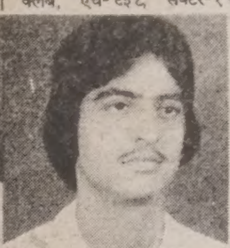
सुधीर राजपाल, ६७६ रिकाबगंज, फैजाबाद (यू०पी०), ११ वर्ष, क्रिकेटखेलना, कामेन्ट्रीसुनना।



संजय टंडन, ४३, कनेडी एवन्यू माल रोड अमृतसर, १३ वर्ष पेंटिंग, तैरना।



रग लाल सिंह, ग्राम पो० जोधा का बास वाया अरडावता जि० झुन्झुनू (राज०), २१वर्ष, राजनिती।



गिरधारी लाल, लमली इम्पोरियम, बस स्टैण्ड बलांगीर, १८ वर्ष, पत्र मित्रताआँखमारना।

हमारा पता: दीवाना फ्रैंडस क्लब ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______________________

पता ______________________

____

आयु ____ **शौक** ______________________

तेज प्रैस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता

पृष्ठ १० से आगे

"मालिक, हम लोगों के आने के बाद मालकिन के कपड़ों में आग लग गयी और वे जन्नत को प्यारी हो गयीं।" यह सुन सऊद को काटो तो खून नहीं। उसने पूछा, "चल, बन्द कर गोदाम और घर चल।"

"पर मालिक, वे तो क़ब्रिस्तान भी पहुंच गयी हैं, वहां सभी लोग आपका इंतज़ार कर रहे हैं।" अली ने रोते हुए कहा।

यह सुन सऊद अली को लेकर क़ब्रि-स्तान जा पहुंचा। वहां अपनी बेगम को ज़िन्दा देख चकरा गया। उधर बेगम भी भौंचक्की-सी खड़ी सऊद को देखती रही। इस पर सऊद ने आगे बढ़कर बेगम से पूछा, "तू तो मर गयी थी?"

"यही तो मैं आपसे पूछने वाली थी। अली ने बताया था कि गेहूं की बोरियों के नीचे दबकर आप . . ."

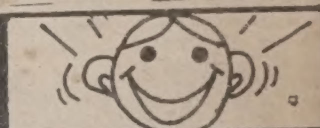
"अली! कमबख़्त!! तूने यह क्या कमीनी हरकत की? आज मैं तुझे ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगा।" यह कह सऊद अली को मारने दौड़ा। अली तुरंत ही भागते हुए बोला, "मालिक, मैंने तो आप से पहले ही कह दिया था कि मुझे साल में एक झूठ बोलने की आदत है।"

"अरे कमबख़्त, अगर तूने ऐसा झूठ दो-तीन बार और बोला तो मेरा तो दिवाला ही निकल जाएगा। मैं तुझे अपने यहां नहीं रखूंगा, बेच दूंगा!" सऊद ने दुःखी हो कर कहा, तो अली बोला, "पर मालिक, आपकी शर्त . . ."

"ओह! जा, मैंने तुझे आज़ाद कर दिया। अब दूर हो जा मेरी नजरों से!" सऊद ने बौखलाकर कहा।

अली को और चाहिए ही क्या था! वह बहुत प्रसन्न था। उसने अपने बुद्धि-बल से मुक्ति पा ली थी।

हंसना मना है



● एक अभिनेत्री ने कई शादियां कीं और अदालतों में मुकदमों के बाद तलाक ले लिये। उसका आठवां पति अब उसे पत्र लिखता है तो इस प्रकार सम्बोधित करता है, "प्रियतमा तथा मेम्बराने जूरी . . ."!